the little group Club
shimla

2/9/14

To

ICH Department

Sangeet Natak Academy

Rabindra Bhavan ,Feroze Shah Road.

New Delhi -110001.

Sub: **Submission of first report of International Shivratri Festival of Mandi ,H.P.**

Sir,

In response of letter No.28-6/ICH-Scheme /23/2013-14 and your e-mail we are submitting our first report of the project International Shivratri Festival of Mandi H.P. Since the project is Video Documentation of the above festival which is going to held in the month of February, before that we cannot submit the Video footage We are submitting first report with photographs and some of video footage.

Please find attached.

Report of the Project.

Photographs.

CD of Video Footage.

Regards.

Ashok Sharma.(Sect.)

The Little Group Club Shimla.

C/O Sh. Shobha Ram Shop No.3,

Phagli Bypass Road,Phagli .Shimla 4. H.P.

LITTLE GROUP CLUB
SHIMLA H.P

dlittlegroupclub@gmail.com +91 9810284784
C/o Shri Shobha Ram, Shop No. 3, Phagli Bypass, Shimla-04, Himachal Pradesh
Ph. +91 9810284784, E-mail : dlittlegroupclub@gmail.com, ashokbunny07@yahoo.co.in

ICH: Shivratri of Mandi HP

किसी भी देश या प्रदेश में कुछ ऐसे नगर ज़रूर होते हैं जो अपने जुड़ाव की परिधि के समस्त भू-भाग की सांस्कृतिक विरासत अपने में संजोये रखते हैं । अपने आबाद होने के प्रारंभिक दौर से लेकर कालक्रम में इतिहास की परतें इन नगरों में एक पर एक जमती जाती हैं और इस तरह अपने वर्तमान में ठहरकर सुदूर अतीत को जानने-समझने के लिए भी इन नगरों मे अनेक महत्वपूर्ण साक्ष्य मौजूद रहते हैं । ऐसे नगरों में देश या प्रदेश की पुरानी राजधानियां विशेष महत्व रखती हैं, जहां ऐसी पुरातत्व सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहती है जिसके माध्यम से हम नगर से जुड़े व्यापक सामाजिक जीवन क़े इतिहास की पड़ताल भी कर सकते हैं । हिमाचल प्रदेश में भी कुछ ऐसे नगर हैं जो विभिन्न विधाओं की सांस्कृतिक विरासत अपने में संजोये हैं । इनमें ज़्यादातर वे नगर हैं तो स्वतंत्रता पूर्व रियासती शासकों की राजधानियों के रूप में सदियों से आबाद रहे और अब ज़िला मुख्यालयों के रूप में हैं । लेकिन इधर निर्माण का जो नया दौर शुरू हुआ है उसमें इन नगरों की पुरातत्व बराबर नष्ट-भ्रष्ट होती जा रही है ।

हिमाचल के मध्य में बहने वाली ब्यास नदी के तट पर बसा मंडी नगर अनेक कारणों से उल्लेखनीय है । इसी ब्यास का पौराणिक नाम 'विपाशा' रहा है, जो ऋषि वशिष्ठ को पाशमुक्त करने के कारण 'विपाशा' कहलाई, लेकिन अब लोक में ब्यास नाम से जानी जाती है । रोहतांग से निकली यह नदी कुल्लू घाटी से गुज़रकर आगे निकलती है तो इसके दोनों तटों पर आबाद मंडी नगर आता है । इस नगर के नाम को लेकर भी कई जन-श्रुतियां सामने आती हैं, मगर सबसे तर्क संगत यही मालूम पड़ता है कि नदी के साथ जो पुराना रास्ता कभी लाहुल-लद्दाख से होता मध्य एशिया तक जाता था उसमें यह शहर अपने समय की व्यापारिक मंडी के रूप में प्रख्यात रहा, इसलिए यह नगर सहज ही मंडी कहलाया ।

मंडी नगर खास तौर से रियासती काल के नगर नियोजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। हिमाचल प्रदेश के राज्य नगर योजनाकर आद राम संख्यान ने इस शहर के पारम्परिक नियोजन पर विस्तार से प्रकाश डाला है जिससे यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण की दृष्टि से रियासती समय का यह नियोजन अपने में एक उदाहरण था । जबकि आज आबादी और निर्माण के घनत्व के रहते इसका विघटन होता दिखाई देता है । दरअसल यह स्थिति केवल इस नगर को लेकर ही नहीं, अपितु प्रदेश के दूसरे पुराने शहरों की स्थिति भी यही बनती जा रही है ।

मंडी नगर में साहित्यकारों, कलाकारों शिल्पियों और संस्कृति कर्मियों का एक बड़ा समूह हमेशा सक्रिय रहा है । वास्तव में ये सृजनशील और कलाधर्मी लोग ही किसी नगर की पहचान कायम करते है । यही कारण है कि आज भी सुशिक्षित लोगों के इस शहर में सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए काफी बड़ा जन-समूह उमड़ पड़ता है । आज भी इस नगर में ऐसे अनेक रचनाकार सर्जनात्मक लेखन और कलाओं में सक्रिय हैं जिनकी रचनाओं में मंडयाली जीवन की बहुरंगी छवियां देखी जा सकती है । समकालीन हिन्दी साहित्य में अपना सार्थक हस्तक्षेप रखने वाले सुंदर लोहिया, योगेश्वर शर्मा, रेखा और नरेश पंडित जैसे अनेक कथाकार इस शहर की देन हैं ।

मंडी नगर पुरातत्व धरोहर ही रही होगी: क्योंकि नदी-तटों से लेकर नगर के केन्द्रीय स्थलों व महलों तक इस शहर में पुरातत्व सम्पदा से भरपूर इतने मन्दिर हैं कि इस बहुतायत के कारण ही इसे छोटी काशी भी कहा जाता है ।

आज मंडी नगर हिमाचल प्रदेश के ज़िला मण्डी का मुख्यालय है । ब्यास नदी और सुकेती खड्ड के संगम स्थल के आस-पास किसी समय इस नगर का निर्माण बहुत सीमित स्तर पर आरम्भ किया गया था । समय के बीतने के साथ अब इसका विस्तार सभी दिशाओं में कई किलोमीटर के दायरें में हो गया है और इसके विस्तार की प्रक्रिया बराबर जारी है ।

युगों से समाज का ढांचा निरन्तर परिवर्तित होता रहा है । जब कभी आदिम कबायली समाज था तो जहां भी हरी-भरी और खुली चरागाहें थीं, खेती योग्य बढ़िया भूमि थी, पानी और लकड़ी की सुविधा वाली तलहटियां और नदी-घाटियां थीं। आस-पास घने जंगल थे - वहां मानव जातीय समूह आ बसते थे ! राजतन्त्र के युगों में ही क्रमश: नगरों का निर्माण आरम्भ हुआ लगता है । कबायली गणतन्त्रों द्वारा भी नगर स्थापित किए जाने लगे थे । राजतन्त्र व कुलीन गणतन्त्र के बिखराव के बाद छोटे-छोटे स्थानीय सरदारों ने अपने राज्य स्थापित कर लिए थे और उनकी रक्षा व विस्तार के लिए वे भी निरंतर लड़ते रहते थे । हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र में इतिहासकारों ने उनकी पहचान राणाओं और ठाकुरो के रूप में की है । उनके समय में गढ़ों के निर्माण की प्रम्परा रही, जो सुरक्षा की दृष्टि से बनाए जाते थे । शत्रु द्वारा आक्रमण किए जाने की स्थिति में गढ़ के भीतर चले जाना और प्रवेश द्वार को मज़बूती से बन्द करके उसके भीतर से शत्रु पर वार करते रहना और उसे भागने के लिए विवश करना गढ़ के स्वामी शासक की रणनीति हुआ करती थी । आम स्थिति में राणा और ठाकुर अपने परिवार के साथ एक विशेष गांव में रहते थे जो गढ़ के नीचे सुरक्षित व सुविधाजनक स्थान पर बसा होता था । वह प्राय: 'घरवासड़ा' कहलाता था । जहां कहीं भी गढ़ बचे हैं आज भी उनके पास इस नाम के गांव मिलते हैं ।

सामन्ती राज्यों की स्थापना राणाओं और ठाकुरों से उनके नियन्त्रण वाले क्षेत्र छीन कर कुछ सशस्त्र और युद्ध-निपुण सामन्तों व उनके परिजनों ने की जो कई कारणों से मैदानी क्षेत्रों से अथवा अन्यत्र स्थापित अपने वंश राज्यों को छोड़ कर इधर पहाड़ों में चले आए । मण्डी रियासत की स्थापना भी इसी प्रकार हुई थी । यह माना जाता है कि बंगाल में एक समय शासन करने वाले सेनवंश के उत्तराधिकारियों को आक्रमणों की मार से बचने के लिए सुरक्षित स्थानों की ओर जाना पड़ा । इनमें से एक ने आठवीं सदी ईस्वी के छठे-सातवें दशक में यहां आकर सुकेत रियासत की स्थापना की । सुकेत के एक राजा का भाई राज्य छोड़कर चला गया और कुल्लू के मंगलौर क्षेत्र का शासक बन गया । उसकी दसवीं पीढ़ी में बान सेन ने एक नई रियासत की स्थापना की । उसका नाना शिवकोट का राणा था । उसके कोई पुत्र नहीं था, अत: उसने बानसेन को अपना उत्तराधिकारी बनाया । नाना की मृत्यु के बाद सेन ने आस-पास के तीन-चार राणाओं को हरा कर अपना राज्य बढ़ा लिया और ब्यास नदी के तट पर राजधानी बनाई । स्थान का नाम भिऊली था । इतिहासकारों का यह मानना है कि सबसे पहले वहीं नगर बनाया जाना आरम्भ हुआ । बान सेन के राज्य का स्थापना वर्ष सन् 1280 ई. माना गया है । वैसे यह भी कहा गया है कि सन् 1500 ई. से पहले यहां राजाओं के शासन का इतिहास अनुमानों पर ही आधारित है, प्रामाणिक नहीं है । आगे चलकर यह रियासत मण्डी के नाम से जानी जाने लगी ।

बान सेन का राज-निवास कहां बना, उसके महल कैसे थे - इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण शेष नहीं है । फिर भी जैसी कि मौखिक परम्परा सुनते आ रहे हैं, सबसे पहले वह भिऊली नामक स्थान में रहने लगा । वहां कुछ भवन बनवाए गए थे, जिनके अवशेष कुछ वर्ष पहले तक विद्यमान थे । वहां और भी घर बने थे । मगर कितने लोग वहां रहते थे, इस बात की भी कोई जानकारी नहीं है । अब तो भिऊली भी एक उप-नगर बन गया है, यदि कहीं कुछ अवशेष रहे भी होंगे, वे मिटाए जा चुके हैं । बान सेन द्वारा बनवाया गया एक मात्र मंदिर दूर ऊपर पहाड़ में पराशर झील के किनारे पराशर ऋषि के नाम से उसकी शेष निशानी है ।

सन् 1300 ई. में बानसेन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र कल्याण सेन राजा बना । उसने भिऊली से लगभग डेढ़ किलोमीटर उत्तर-पश्चिम की ओर रेढ़धार के मूल में सुकेत रियासत के अधीनस्थ एक राणा से कुछ जगह ली और वहां पर राजधानी बनाने का काम आरम्भ किया । उस स्थान का नाम बटाहुली बताया गया है । आज उसका नाम पुरानी मण्डी हो गया, जो आज तक भी है । इस स्थान पर लगभग पहाड़ी के मूल में कुछ महल बनवाए गए । उनके आस-पास अन्य लोगों के घर भी बने । बावड़ियों और तालाबों का निर्माण भी करवाया गया । इक्का-दुक्का छोटे-छोटे मंदिर भी सम्भवत: निर्मित किए गए । इस क्षेत्र के

पश्चिमी छोर पर, जहां अब त्रिलोकनाथ मंदिर है, उसके पीछे ऐसे मंदिर आज भी हैं । कल्याण सेन से लेकर दिलावर सेन तक छह राजाओं के काल में बटाहुली में ही राजधानी रही । कम स्थान होने से वहां कोई बड़ा नगर विकसित होने की सम्भावना नहीं थी । बटाहुली में बने महलों आदि के जो अवशेष कुछ वर्ष पहले तक थे, वे गिरे-बिखरे पत्थरों के ढेर भर थे । दीवारें तो नाम भर को बचीं थीं । सन् 1905 के भीषण भूकम्प ने अवशेषों की तो बात ही क्या पुरानी मण्डी और मण्डी नगर के अच्छे व साधारण सभी प्रकार के मकानों को बुरी तरह गिरा-बिखरा दिया था । इसलिए उससे पहले के निर्माण का रूप बाद में बिलकुल ही बदल गया था ।

दो सौ वर्षों में सेनवंशी राजाओं ने अनेक राणाओं और ठाकुरों को हराकर रियासत का काफ़ी विस्तार कर लिया था । इस कारण सुकेत और कुल्लू के राजाओं के साथ संघर्ष की सम्भावनाएं बढ़ गई थीं, इसलिए राजधानी के लिए काफ़ी विस्तृत और सुरक्षित जगह चाहिए थी । सन् 1500 ई. में अजबर सेन राजा बना । उसने शेष बचे राणाओं और ठाकुरों को भी अपने अधीन करने का अभियान तेज़ कर दिया । बटाहुली के सामने ब्यास नदी के पार सुकेती खड्ड के साथ काफ़ी विस्तृत और अपेक्षकृत समतल भूखण्ड था । वहां सधियाणा नाम का एक गांव था । वह क्षेत्र गन्धर्व के राणा गोकल का था, जो तब तक अजबर सेन की अधीनता से बचा हुआ था । उसने अजबर सेन को समाप्त करवाने का षड्यन्त्र रचा, परन्तु सफल नहीं हुआ और मारा गया । उसका सारा क्षेत्र भी अजबर सेन के हाथ आ गया ।

सन् 1527 ई. में राजा अजबर सेन ने सधियाणा गांव के स्थान पर कुछ आरम्भिक परन्तु महत्वपूर्ण निर्माण पूरा करवा लिया । एक तो भूतनाथ का मंदिर बनकर पूरा हो गया । दूसरे भूतनाथ से थोड़ी दूर, पूर्व की ओर एक बड़ा महल बनवाया, जिसे चौकी के नाम से जाना जाता रहा । यद्यपि अब उसके खण्डहर भी शेष नहीं बचे हैं, क्योंकि उस जगह अब बहुत बड़ी संख्या में नये और पुराने मकान बनाए जा चुके हैं । महल के पीछे बाज़ार बना, जिसका नाम 'चौहटा' या 'चौहाटा' पड़ा । कहते हैं पहले वहां पर चार हाटें (दुकानें) खोली गई । धीरे-धीरे वहां पर आमने-सामने दुकानों की कतार बनती गई । इसके दक्षिणी-पश्चिमी छोर पर, जहां पर अब गान्धी भवन विद्यमान है, रियासत की जेल का भवन था । 31 दिसम्बर, 1955 को वह पुराना भूतहा भवन आग लगने से जल गया था । बताया जाता है उस स्थान पर गान्धी भवन के निर्माण के दौरान खुदाई में ज़ंजीरों में बंधे कई अस्थि-पिंजर मिले थे जो सम्भवतः ऐसे कैदियों के थे जो उसके तहखानों में ही मर गए थे । उसे नये नगर के निर्माण के साथ ही राजा अजबर सेन ने बटाहुली को छोड़ यहां राजधानी बना ली ।

उस स्थान पर धीरे-धीरे नगर विकसित होता गया । भविष्य में वह 'मण्डी नगर' के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

पुरानी राजधानी बटाहुली के पश्चिमी कोने पर अजबर सेन की रानी सुरत्ना अथवा सुल्ताना देवी ने ठीक ब्यास नदी के पाट के ऊपर त्रिलोकनाथ का मंदिर बनवाया था । शिखर-मण्डप शैली का यह मंदिर कलात्मक मूर्तियों और भव्य निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है । त्रिलोकनाथ मंदिर के पीछे बने छोटे आकार के तीन मंदिर तो उससे भी पहले के हैं, सभी शिवलिंग वाले हैं मगर निर्माण शैली में भिन्नता है । इस मंदिर परिसर में ही एक चट्टान के साथ छोटे-बड़े छह मृतक-स्मारक (बरसेले) हैं । यहां के राजाओं द्वारा मृत राजाओं की स्मृति में ये बनवाए जाते रहे हैं । बटाहुली में छह राजा हुए इस बात का प्रमाण अब मात्र ये बरसेले हैं । नये स्थान पर राजधानी ले जाए जाने के बाद बटाहुली (पुरानी मण्डी) उपेक्षित-सी हो गई । नई राजधानी के 'मण्डी' नामकरण के बाद उसका नाम पुरानी मण्डी हो गया, जो अब भी प्रचलन में है ।

राजा सूरज सेन द्वारा नगर के दक्षिण की ओर, एक ऊंची टेकरी पर दमदमा नामक महल बनवाया गया । यह महल तराशे हुए बलुआ पत्थर और देवदार के विशाल पेड़ों की लकड़ी से बना है । दो मंज़िल के इस विशाल महल के ढलवां छप्पर नीले स्लेट के हैं । इसकी लम्बाई और ऊंचाई के अनुपात में न तो कोई दूसरा महल है और न ही कोई दूसरा भवन । इसी में निचली मंज़िल के एक कमरे में 'माधो राय' स्थापित हैं, कहते हैं कि राजा सूरज सेन ने उन्हें अपना राज्य सौंप दिया था, क्योंकि उनके 18 पुत्र होने पर भी कोई उत्तराधिकारी नहीं बचा था । राजा स्वयं माधो राय के प्रतिनिधि बन राज्य चलाते रहे । उसके बाद 'माधोराय' जिन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है, उन्हें ही मण्डी रियासत का शासक माना जाता रहा है । कुल्लू व चम्बा में भी क्रमशः ऐसे ही रघुनाथ (रामचन्द्र) और ठाकुर (रामचन्द्र) को राज्य सौंप देने के प्रसंग रहे हैं ।

मण्डी नगर में आयोजित किए जाने वाले आठ दिन के शिवरात्रि मेले (जातरा) में सारी रियासत के स्थानीय देवी-देवताओं के रथों के साथ पालकी में माधो राय की शोभायात्रा अब भी हर साल निकाली जाती है । राजा श्याम सेन ने नगर के पश्चिम की ओर की टारना पहाड़ी पर श्यामा काली का मंदिर निर्मित करवाया । यह मंदिर राजा ने सुकेत के राजा को हराने और मण्डी रियासत की सीमा का विस्तार सुकेत की राजधानी लुहारा तक पहुंचाने की स्मृति में बनवाया था । उस समय तक सुकेत की सीमा वर्तमान थनेहड़ा मुहल्ला के नीचे बने जैंचु-नौण (तालाब) तक थीं ! तब से जैंचु-नौण मण्डी नगर में आ गया । सेन वंशी तब से श्यामाकाली को कुलजा के रूप में मानते आ रहे हैं । राजा गुर सेन ने जगन्नाथ से

लाई गई जगन्नाथ (कृष्ण), सुभद्रा और बलराम की लकड़ी की मूर्तियों की स्थापना के लिए सुकेती खड्ड के पार (वर्तमान पड्डल का उत्तरी छोर) एक मंदिर बनवाया था ।

राजा सिद्ध सेन के समय में राजधानी नगर मण्डी में अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ । वर्तमान 'राजमहल होटल' के पास राजा ने भूमिगत शिव की स्थापना करवाई थी । चूंकि राजा सिद्ध सेन स्वयं तांत्रिक था । अत: बताया जाता है कि वह किसी-किसी अनुष्ठान में नरबलि भी देता था । बलि के लिए ऐसे अपराधी को चुना जाता था जिसे मृत्यु दण्ड दिया गया हो । राजा सिद्ध सेन द्वारा जिन मंदिरों का निर्माण करवाया गया उनके साथ सिद्ध शब्द अवश्य जोड़ा गया । इसलिए सिद्ध शिव, सिद्ध गणेश, सिद्ध गणेश, सिद्ध भद्रा आदि के मंदिर सिद्ध सेन के बनवाए बताए जाते है । उनके बनवाए सभी मंदिरों के बारे में तांत्रिक चमत्कारों की कथाएं भी मण्डी नगर व पूरी रियासत में प्रचलित रही हैं । ब्यास और सुकेती के संगम के पास निर्मित शिखर-मण्डप शैली का विशाल मंदिर 'पंचवक्त्र' भी राजा सिद्ध सेन द्वारा बनवाया बताया जाता है, परन्तु उसके नाम के साथ सिद्ध शब्द को प्रयोग नहीं मिलता ।

मण्डी नगर की पहचान का प्रतीक कहलाने वाला 'घण्टाघर' एक पुराने विशाल तालाब के बीचोंबीच है । इस तालाब का निर्माण भी सिद्ध सेन ने करवाया था । एक छोटी-सी रियासत भंगाहल को मण्डी में मिलाने के लिए राजा सिद्ध सेन ने, वहां के राजा को, जो उसका बहनोई (अथवा जवाई) था, अपने यहां बुलवाया और धोखे से उसका कत्ल करवा दिया था । उसके शरीर के चार भाग करवा कर तालाब के चारों कोनों में और सिर उसके बीच में दबवा दिया था, जहां अब घण्टाघर खड़ा है । इस विशाल तालाब को उस समय पानी से भर कर रखा जाता था जहां आजकल इंदिरा मार्केट नामक व्यापारिक परिसर है ।

राजा सिद्ध सेन के समय ही गुरु गोबिन्द सिंह कुछ समय मण्डी में रहे थे । वे नगर से डेढ़-दो किलोमीटर पूर्व की ओर एक सुनसान स्थान में ठहरे थे, जहां बाद में एक छोटा-सा गुरुद्वारा बना दिया गया था । गुरुद्वारे के ठीक नीचे ब्यास नदी के साथ वह चट्टान है जिस स्थान को लेकर यह मान्यता है कि बहुत प्राचीन काल में यहां माण्डव्य ऋषि के वहां तप करने से पड़ा ।

राजा सिद्ध सेन ने गुरु गोबिन्द सिंह का बहुत सम्मान किया । उनके मण्डी क्षेत्र में प्रवास काल में उनकी हर तरह से सेवा की । राजा के सद्व्यवहार से गुरु गोबिन्द सिंह भी प्रसन्न थे । उस समय के एक प्रसंग को सुनाते हुए लोग कहते हैं कि ब्यास के किनारे जाकर गुरु गोबिन्द सिंह ने राजा सिद्ध सेन से पानी की धारा में खाली घड़ा फैंकने को कहा । देखते-देखते घड़ा टूटे बगैर नदी की धारा में निरापद बहता रहा ।

इस पर गुरु गोविन्द ने कहा, -

जैसे बची राजा तेरी हण्डी
वैसे बचेगी तेरी मण्डी ।
जो मण्डी को लूटेगा....
उस पर आसमानी गोला छूटेगा ।

इतिहास के रूप में जो जानकारियां मिलती हैं उनमें राजा अजबर सेन से लेकर राजा जोगेन्द्र सेन तक के काल में मण्डी नगर में राज महलों, मंदिरों आदि के अतिरिक्त नागरिकों ने विभिन्न प्रकार के मकान अपनी-अपनी हैसियत के अनुरूप बनाए । निवास स्थलों के अलावा दुकानें बनीं, बाज़ार विकसित हुए, गलियां निर्मित हुई, चौराहे बनाए गए । बीच-बीच में खुले समतल मैदान भी कहीं-कहीं तामीर किए गए । नगर का विस्तार मुख्य रूप से भूतनाथ, चौहाटा बाज़ार से ही चारों दिशाओं में होता रहा ।

दमदमा महल के बाद भडन्ती बेहड़े (महल) का निर्माण करवाया गया और उसका एकाधिक बार विस्तार भी हुआ । बहुत बाद में नगर के पश्चिमी भाग में पहाड़ी के मूल में विजय पैलेस का निर्माण विशेष योजना से करवाया गया था, सम्भवतः क्योंकि पैलेस (महल) के दोनों ओर काफी बड़ी जगह में सुन्दर बागीचा लगवाया गया था, जिसमें फलदार पेड़ भी लगवाए गए थे और कई प्रकार के फूलों के पौधे व पेड़ भी सजावट और छाया के लिए लगाए गए थे । फूलों की क्यारियां व घूमने के लिए पार्क सजाया गया था । अनेकों रास्ते पक्के तराशे पत्थर के बनाए गए थे । बाड़ के लिए झाड़ियां लगाई गई थीं जिनको सुन्दर आकार में काटा-छांटा जाता था । नगर के दक्षिणी छोर पर बनाए गए, महलों के नीचे केसरी-बंगले के चारों ओर भी बाग लगाया गया था ।

रियासती काल में नगर में मुख्य रूप से जो लोग रहने लगे थे, उनमें एक तो राज-परिवार के सगे-सम्बन्धी दूसरे दरबार व राज्य की सहायता सेवा के कामों से सम्बन्धित सरकारी सेवा से जुड़े लोग थे । कर्मकाण्ड पूजा आदि से सम्बन्धित पुरोहित व यज्ञ-विवाहादि में भोजन तैयार करने वाले रसोइस (बोटी) थे । राजमहल व नगर के लोगों की ज़रूरत का सामान बेचने वाले व्यापारी और कई आवश्यक वस्तुएं तैयार करने वाले दस्तकार थे । जातियों के रूप में नगर में मियां (राजवंशी राजपूत), खत्री, बोहरे (महाजन), ब्राहण, नाई, धोबी, दसाली(पत्तलें बनाने वाले), लुहार, थावीं (कारीगर), नलारी व चमड़े का काम करने वाले आदि थे । सैनिक प्रायः राजपूत या अगड़ी जातियों से ही होते थे ।

Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Traditions of India

The Night of Shiva : Shivratri Festival of Mandi

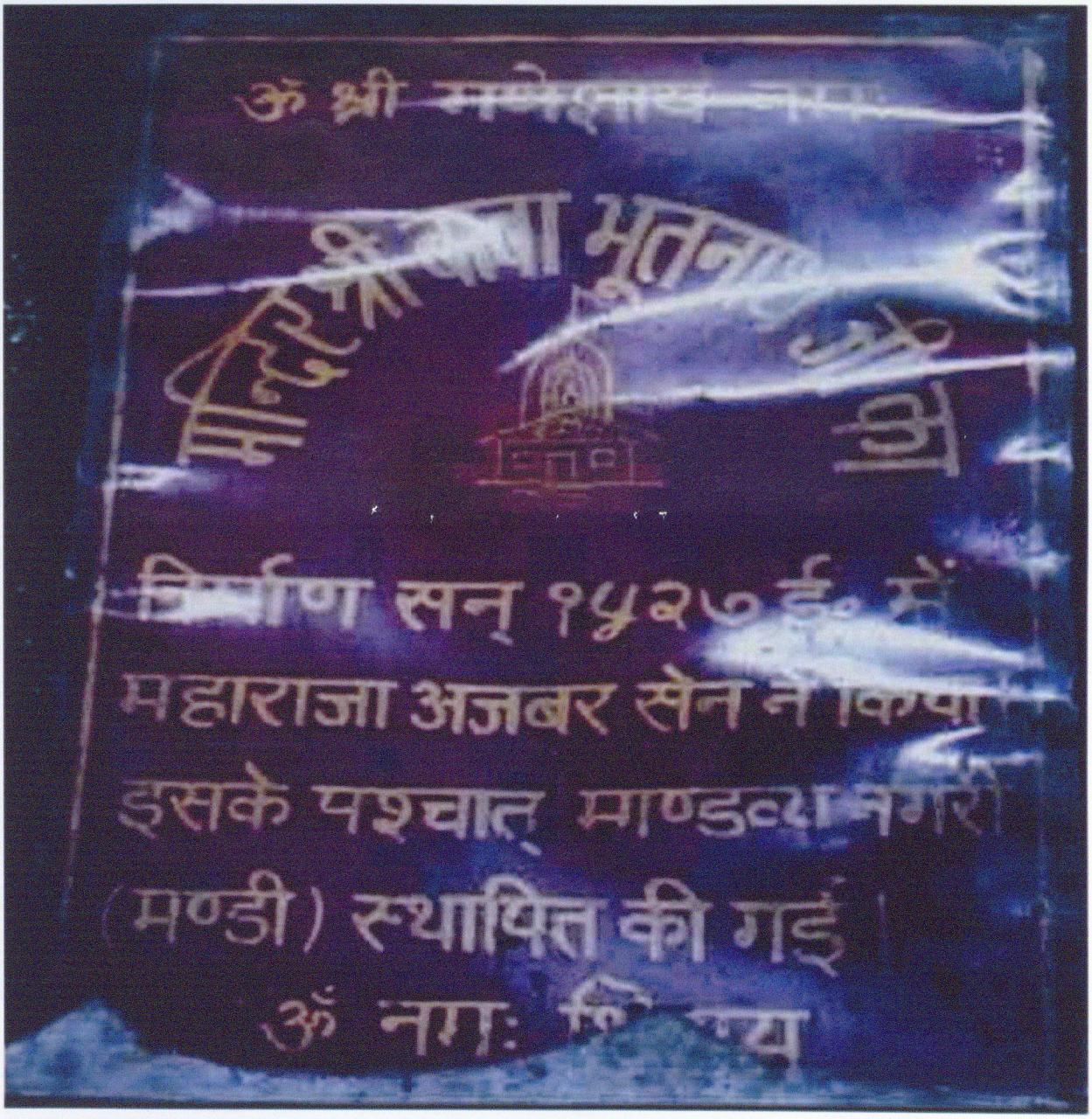

The Little Group Club C/O Sh. Shobha Ram Shop No. 3,Phagli Bypass Road,Phagli Shimla 4. H.P.

More than 200 Deities of the Mandi District assemble for Shivratri Festival

More than 200 Deities of the Mandi District assemble for Shivratri Festival

Raja Ajber Sen found this Shivalinga in a forest of Mandi and erected Bhootnath Temple in 1526 and started the observance of the Shivaratri Festival at Mandi.

Prepration of Maha Shivratri: Pujari at Bhootnath Temple

Shivratri is the special fair which transforms Mandi town into a venue of grand celebration

Madhoo Rai (Lord Vishnu) King of the State of Mandi

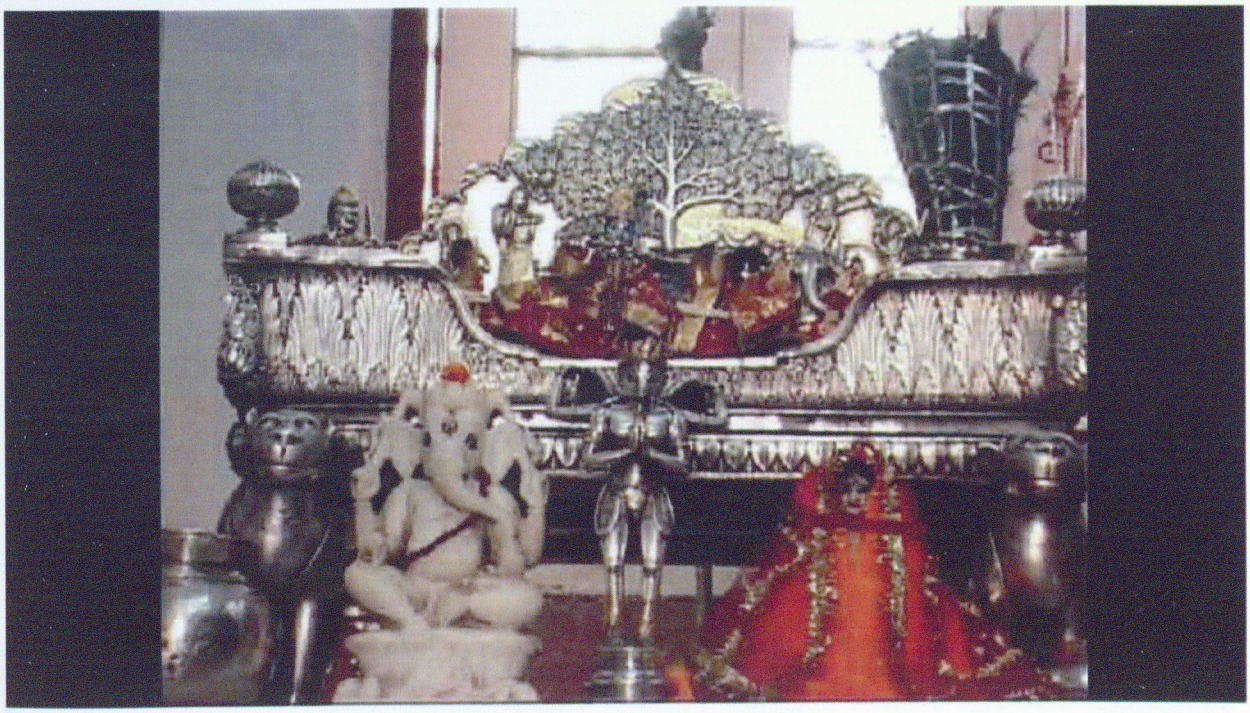

Man as Krishna in front of Madhoo Rai Temple

Shivratri fair Mandi was started by Raja Ajber Sen 300-400 years ago at Purani Mandi

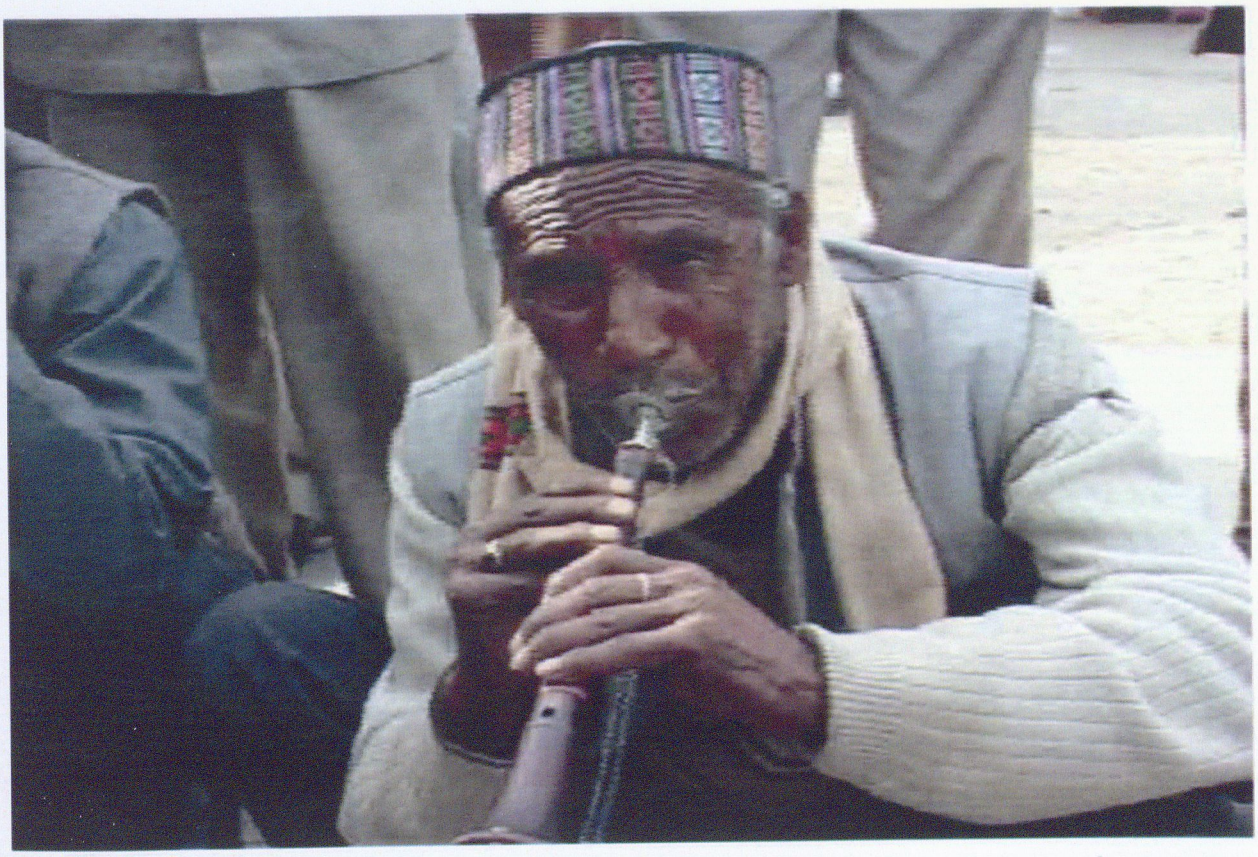

Traditional instruments

Gurudwara at Mandi: Guru Gobind Singh did his Tapsya at this place

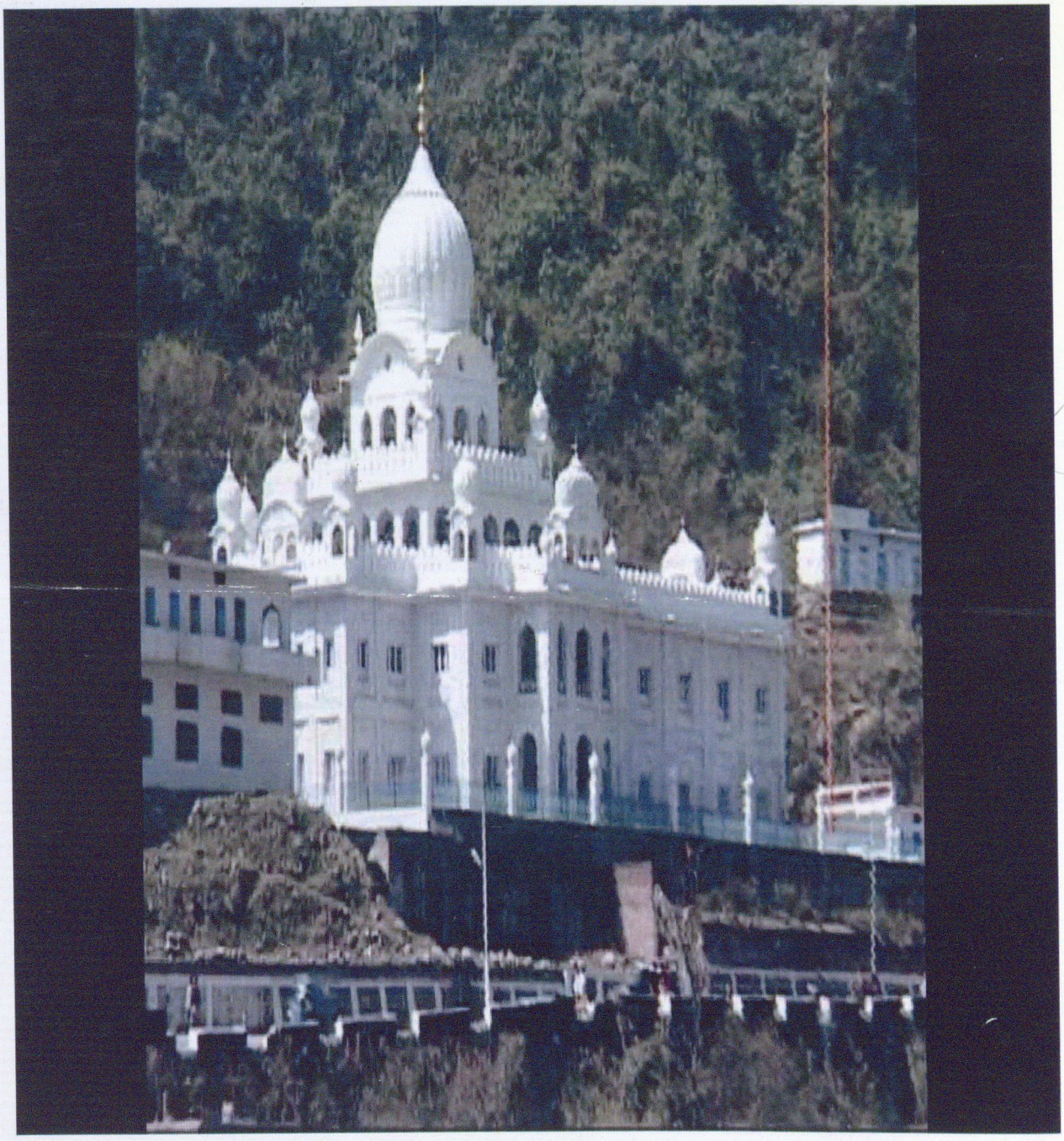

+91 9810284784 dlittlegroupclub@gmail.com

Blueprint for Shivratri fair of Mandi Himachal Pradesh under the Scheme Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Tradition of India, sanctioned under Sanction Letter No. **28-6/ICH-Scheme/23/2013-14/13638. Dated 31st March 2014.**

INTRODUCTION

The Night of Shiva---Shivratri of Mandi

Himachal Pradesh is a land of Gods and fairs & festivals, Shiva is the Chief Deity of Himachal apart of beautiful landscape, Lord Shiva and Shakti are the main deity of this Devbhumi and Shivratri is the biggest International fair of Himachal Pradesh. It is said that in 1526, Raja Ajber Sen of Mandi heard the story of a cow offering milk on her own volition to a particular stone in a forest in Mandi. Lord Shiva is said to have appeared in the Raja's dream and directed him to extricate the Shiva Linga that was buried at that site. Thereafter the Raja found the Shiva Linga at the indicated location, which he deified in a temple that he erected in 1526 at the place it was found. 'Bhootnath Temple' and started the observance of the Shivaratri festival at Mandi. Concurrent with this event the Raja shifted his capital from Bhiuli to Mandi.

Bhootnath Temple, with an idol of a manifestation of God Shiva an ancient temple dated to the 1520s is synonymous with Mandi. It is in the heart of the town. The Nandi Shiva's mount, faces the deity from the ornamented double-arched entrance. The festival of Shivaratri is the prime event at this temple , the temple is the focal point of the seven day festival.

The Mandi Shivaratri fair is held as per Hindu calendar every year on the Krishnapaksha 13th day/13th night of the waning moon in the month of Phalguna. The festival's popularity is widespread and hence is known as an International festival. In view of the large number of gods and goddesses that are invited to the festival from its 81 temples, Mandi town has the title of 'Varanasi of the Hills'.

Shivaratri festival is famous as the special fair transforms Mandi town into a venue of grand celebration when all gods and goddesses, more than 200 deities of the Mandi district assemble here, starting with the day of Shivaratri. Popularly known as the 'cathedral of temples' is one of the oldest towns of Himachal Pradesh with about 81 temples of different gods and goddesses in its periphery. The festival is centered on the protector deity of Mandi 'Madho Rao' Lord Vishnu and Lord Shiva of the Bhootnath temple in Mandi.

The Shivaratri fair Mandi was started by Raja Ajber Sen, 300-400 years ago at Purani Mandi. Suraj Sen had 18 sons, all of whom died in his lifetime. Suraj Sen got a silver image crafted and named it Madho Rao to which he considered to be the King of the State of Mandi thereafter all the rulers had to serve the state as servants of Madho Rao and caretakers of the State. The illustrious Madho Rao made by the goldsmith Bhima in the year 1705 on Thursday, the 15th Phagan. This date corresponds to A.D. 1648.

King of Kangra Sansar Chand invaded Mandi state in 1792 taking its ruler Ishwari Sen Prisoner for 12 years who was got released by Gurkha invaders who attacked Kangra and Mandi states. Gurkha

invaders returned Mandi state to Ishwari Sen who received a warm reception when he returned to his State. King invited all hill deities and organized a grand function on his return and the occasion happened to be Shivaratri festival. It is believed that thereafter the practice of organizing such function during Shivratri continued year after year and is still in force.

Himachal Pradesh is a land of Gods and fairs & festivals, Shiva is the chief deity of Himachal Pradesh. This festival is given the greatest importance even in temples all through Himachal Pradesh. On this occasion people bring Gods & Goddesses in their Raths. Devotees carry them on shoulders amidst melodious religious songs pay their homage to Lord Shiva at famous temple of Bhootnath in Mandi.

Mandi Shivaratri Festival is an annual fair that is held for 7 days in the Mandi town 31.72 N 76.92 E of the Indian state of Himachal Pradesh. The Mandi Shivaratri festival is held as per Hindu calendar every year on the Krishnapaksha 13th day/13th night of the waning moon in the month of Phalguna. The festival's popularity is widespread and hence is known as an international festival. Mandi Town has the title of 'Varanasi' of the Hills. It is a land of Gods and fairs & festivals an important part of hill culture. Almost every village is associated with this festival of Shivaratri.

Mandi town, where the festival is held, was ruled by Raja Ajber Sen who was considered the first great ruler of Mandi State in the sixteenth century, since he not only combined the hereditary regions but also added to it by conquering new areas. Apart from his palace, he built the temple of Bhootnath for Shiva at the centre of the Mandi town, which is one of the two focal temples of the festival in the theocratic state that evolved during this period, worship of Shiva and related goddesses was dominant. However, the theocratic nature of the state received special emphasis when during Raja Suraj Sen's reign; Vishnu worship also became integral to the State. Raja Suraj Sen (1664-1679) who did not have an heir, built the temple known as 'Madhav Rai temple' dedicated to a form of Lord Vishnu, as protector of Mandi, an elegant silver image was made by his goldsmith Bhima in the year 1705, which was named 'Madhav Rai' and deified, and ordained as the King of the State of Mandi thereafter. Since then the rulers served the state as servants of Madho Rai and custodians of the State. Suraj Sen's successors have also held the deity of the temple in great reverence. This god is represented with precedence over all other gods on various religious occasions. The theocratic nature of the people of the state is amply reflected during the 'Mandi Shivratri Fair'.

On the Shivratri day when the village gods are carried in palanquins or rathas to Mandi to pay homage to Madho Rai and the Raja, members of caste denominations such as Brahmin and Kshatriya carry their gods and goddesses by palanquins or on their back. It is an accepted practice that every deity that is brought to the festival visits Madho Rai temple first to pay obeisance to Lord Vishnu and then proceed to the palace in a colorful procession called the Shoba Yatra, known locally as 'Zareb' to honour the ruler. It is said that Madho Rai comes out of his temple only once a year on the Shivratri day and leads the procession. The ruler (Madho Rai) thereafter pay obeisance to Lord Shiva at Bhootnath temple where the main festival of Shivratri is held. The palanquins of the deities are swayed to the drum beats and folk music to indicate their happiness after visiting the temples of Vishnu and Shiva.

There is pecking order that is maintained in the sequence of worship by the deities invited to the fair, based on rank and status. During all these festivities, it is said that Rishi Kamru Nag, God of rains, the presiding deity of the Maha Shivratri , after paying his obeisance to Madho Rai, moves to the Tarna Ma temple at the top of the Tarna Hill from where he watches the proceedings of the fair for seven days.

The fair is also an occasion when local traders and people carry out brisk trade in local products such as wool, honey, walnut and ghee. The festivities promote handcrafted jewelers of the region.

CONCLUSION

With the changing time and generation these fairs and festival are slowly vanishing we can preserve them with Video Documentation of this 7 days festival held in Mandi Himachal Pradesh

Ashok Sharma

The Little Group Club Shimla.

C/O Sh. Shobha Ram Shop No. 3,

Phagli Bypass Road,

Phagli Shimla -171004

Himachal Pradesh.

Cont. No. +91 9810284784